# Haryana Government Gazette

Published by Authority


© Government of Haryana

No. 49–2024] CHANDIGARH, TUESDAY, DECEMBER 3, 2024 (AGRAHAYANA 12, 1946 SAKA)

## PART-I

### Notifications, Orders and Declarations by Haryana Government

**हरियाणा सरकार**

विरासत तथा पर्यटन विभाग

**अधिसूचना**

दिनांक 27 नवम्बर, 2024

**संख्या 12/250– तिगड़ाना–2024/पुरा/4086-93.**— चूंकि, हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों तथा प्राचीन और ऐतिहासिक संस्मारकों का हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) के अधीन संरक्षण अपेक्षित है;

इसलिए, अब, हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) की धारा 4 की उपधारा (1) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा, नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों को संरक्षित संस्मारक के रूप में तथा उक्त अनुसूची के खाना 2, 3, 4, 5, 6 तथा 7 में विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों को संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित करने का प्रस्ताव करते हैं।

इसके द्वारा, नोटिस दिया जाता है कि इस अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तिथि से दो मास की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् सरकार, ऐसे आक्षेपों या सुझावों, यदि कोई हो, के साथ जो प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार, विरासत तथा पर्यटन विभाग, चण्डीगढ़ द्वारा प्रस्ताव के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति से इस प्रकार विनिर्दिष्ट अवधि की समाप्ति से पूर्व प्राप्त किए जाएं, पर विचार करेगी।

**अनुसूची**

| प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम | पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम | गांव/शहर का नाम | तहसील/जिला का नाम | संरक्षणाधीन राजस्व खसरा/किला संख्या | संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र | स्वामित्व | विशेष कथन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| प्राचीन स्थल तिगड़ाना (हड़प्पन) | प्राचीन स्थल तिगड़ाना (हड़प्पन) | तिगड़ाना | भिवानी | खेवट नं0 299 खसरा संख्या 55//11/1 21/1, 56//6, 56//17, 76//19, 82//1 | 12 एकड़ | रामअवतार आदि व (गैर मुमकिन) खेडा | इस क्षेत्र में सबसे पहले 2400 ईसा पूर्व में ताम्रपाषाणिक कृषि समुदायों का निवास था। ये शुरुआती निवासी (जिन्हें सोथियन के नाम से जाना जाता है) चांग, मिताथल, तिगड़ाना आदि में छप्पर की छतों वाले छोटे मिट्टी, ईंट के घरों में रहते थे। उनकी कुछ बस्तियाँ किलेबंद रही होंगी और उनमें से प्रत्येक में 50 से 100 घर होंगे। वे कृषि में |

| प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम | पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम | गांव / शहर का नाम | तहसील / जिला का नाम | संरक्षणाधीन राजस्व खसरा / किला संख्या | संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र | स्वामित्व | विशेष कथन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| | | | | | | | लगे हुए थे, गाय, बैल, बकरी आदि पालते थे और काले और सफेद डिजाइन के साथ बाईक्रोम में चित्रित पहिये से बने मिट्टी के बर्तनों का उपयोग करते थे। उन्होंने बड़ी संख्या में खोजे गए तांबे, कांस्य और पत्थर के उपकरणों का उपयोग किया। तिगड़ाना में पूर्व सिसवाल, पूर्व हड़प्पा और हड़प्पा के बाद की बस्तियों के अवशेषों की खोज एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोज है। मोतियों और हरी कारेलियन चूड़ियों की उपस्थिति ने मनके बनाने और आभूषण उत्पादन के एक संपन्न उद्योग का संकेत दिया। हड़प्पोत्तर काल के अवशेष इस क्षेत्र में मानव बसावट के विकास और निरंतरता के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। |

कला रामचंद्रन,
प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार,
विरासत तथा पर्यटन विभाग।

**HARYANA GOVERNMENT**

HERITAGE AND TOURISM DEPARTMENT

**Notification**

The 27th November, 2024

**No. 12/250-Tighrana-2024/pura/4086-93.—** Whereas the Governor of Haryana is of the opinion that archaeological sites and remains and ancient and historical monuments specified in column 1 of the Schedule given below requires protection under the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred under sub-section (1) of section 4 of the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964) the Governor of Haryana hereby proposes to declare the ancient and historical monuments specified in column 1 of the Schedule given below, to be a protected archaeological sites and remains as specified in columns 2, 3, 4, 5, 6 and 7 of the said Schedule to be a protected area.

Notice is hereby given that the proposal shall be taken into consideration by the Government on or after the expiry of a period of two months from the date of publication of this notification in the Official Gazette, together with objections or suggestions, if any, from any person with respect to the proposal which may be received by the Principal Secretary to Government, Haryana, Heritage and Tourism Department, Chandigarh before the expiry of the period so specified: -

SCHEDULE

| Name of ancient and historical monuments | Name of archaeological sites and remains | Name of village/ city | Name of tehsil / district. | Revenue Khasra/ Kila number under protection. | Area to be protected Kanal-Marla | Ownership | Remarks |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| Ancient Site Tighrana (Harappan) | Ancient Site Tighrana (Harappan) | Tighrana | Bhiwani | Kevat No. 299 Khasra No. 55//11/1 21/1, 56//6, 56//17, 76//19, 82//1 | 12 Acre | Ramavatar etc. and (Gar. Mumkin) Khera | The region was first inhabited by the Chalcolithic agricultural communities as early as 2400 BCE. These early settlers (popularly known as Sothians) lived at Chang, Mitathal, Tighrana etc. in small mud-brick houses with thatched roofs. Some of their settlements may have been fortified and comprised 50 to 100 houses each. They engaged in agriculture, domesticated cows, |

| Name of ancient and historical monuments | Name of archaeological sites and remains | Name of village/ city | Name of tehsil / district. | Revenue Khasra/ Kila number under protection. | Area to be protected Kanal-Marla | Ownership | Remarks |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| | | | | | | | bulls, goats etc., and used wheel made pottery painted in bichrome with black and white designs. They used copper, bronze and stone implements as discovered in large numbers. The discovery of remains from Pre-Siswal, pre-Harappan and post Harappan settlements at Tighrana, is a significant archaeological find. The presence of Beads and green carnelian bangles indicate a thriving industry of bead making and jewelry production. Remains of post Harappan period provide insight into the evolution and continuity of human settlement in the region. |

KALA RAMACHANDRAN,
Principal Secretary to Government, Haryana,
Heritage and Tourism Department.

11440—C.S.—H.G.P., Pkl.